## स्नातक – तृतीय वर्ष , प्रथम प्रश्न पत्र

# समाजशास्त्र की उत्पत्ति

(भाग : प्रथम)

## विषय प्रवेश-

सामाजिक ज्ञान उतना ही प्राचीन है जितना कि मानवीय समाज । सृष्टि के प्रारंभ से ही मानव अपने सामाजिक जीवन के बारे में सोचता आया है और सोचता रहा है । समूह के क्रियाकलापों में भाग लेने के लिए आवश्यक है कि आने वाली विभिन्न समस्याओं को सुलझाया जाए । इन्हीं प्रयत्नों के परिणाम स्वरुप ही समाजशास्त्र की उत्पत्ति हुई है और इसका विकास अविराम गति से होता जा रहा है । वास्तव में समाजशास्त्र का अतीत बहुत लंबा है परंतु इतिहास उतना ही छोटा है ।

एक पृथक विषय के रूप में समाजशास्त्र का इतिहास 200 वर्ष से कम पुराना है । इस विषय के अंतर्गत समाज का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है । पूर्व में समाज , सामाजिक संबंधों , परिवार , विवाह , सामाजिक संपत्ति , सामाजिक संस्थाओं आदि पर धर्म का प्रभाव स्पष्ट था । ईसा के जन्म के पूर्व भारत , चीन , अरब , ग्रीस ,रोम आदि देशों में सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्षों पर दार्शनिक दृष्टिकोण से चिंतन प्रारंभ हुआ । इस समय मनु , कौटिल्य , कन्फ्यूशियस , प्लेटो तथा अरस्तू प्रसिद्ध सामाजिक दार्शनिक हुए । यद्यपि प्रारंभ में समाज और सामाजिक जीवन को धार्मिक एवं दार्शनिक आधार पर समझने का प्रयत्न किया गया लेकिन धर्म और दर्शन की पद्धतियों में वस्तुनिष्ठता का अभाव था , निरीक्षण एवं परीक्षण को कोई महत्व नहीं दिया गया था ।

तत्पश्चात इतिहास की सहायता से समाज और सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझने का प्रयास किया गया । समाजशास्त्र के अंतर्गत इतिहास की सहायता से बीते हुए युग के संबंध में जानकारी प्राप्त की गई । अठारहवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों एवं 19वीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में इतिहास एवं दर्शन की अध्ययन विधियों का मिलाजुला रुख देखने को मिलता है । इस प्रकार के विश्लेषण पद्धति के विकास में जर्मन दार्शनिक हीगल का विशेष योगदान था । इससे समाजशास्त्र के विकास में काफी सहायता मिली । इस समय यूरोप में सामाजिक , आर्थिक एवं राजनीतिक पक्षों के लिए राजनीतिक अर्थतंत्र नामक विषय को काफी महत्व दिया गया । इस विषय से संबंधित अध्ययनों ने समाजशास्त्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया ।

समाजशास्त्र के उद्भव एवं विकास पर विचार करने पर तीन प्रकार की विश्लेषण पद्धति उभर कर के सामने आती हैं :

प्रथम विश्लेषण पद्धति मानव चिंतन की निरंतरता पर जोर देती है । इसमें समाजशास्त्र के उदय एवं विकास को प्राचीन युग के सामाजिक चिंतन के साथ जोड़ने का प्रयत्न किया गया । वार्न्स एवं टिमैरोफ ने समाजशास्त्र का

आरंभ चिंतन के एक निरंतर प्रवाह के एक भाग के रूप में माना है । इनके अनुसार, प्राचीन काल में ग्रीस , रोम , भारत , चीन और अरब देशों में समाजशास्त्र का उदय हुआ । सामाजिक जीवन का विश्लेषण करने वाले विभिन्न सामाजिक विज्ञानों जैसे इतिहास , राजनीतिशास्त्र, दर्शन , अर्थशास्त्र तथा प्राकृतिक विज्ञानों में प्रयुक्त अध्ययन-विधियों के सम्मिलित प्रभाव के परिणामस्वरूप समाजशास्त्र की को उत्पति हुई ।

द्वितीय विश्लेषण पद्धति सिद्धांतों तथा तथ्यों के विवेचन पर जोर देती है । इस पद्धति के प्रतिपादक मर्टन का कहना है कि समाजशास्त्र के सिद्धांतों पर विचार करते समय इसके इतिहास के अध्ययन पर जोर नहीं देकर सिद्धांतों एवं तथ्यों के विश्लेषण पर जोर देना चाहिए ।

तृतीय विश्लेषण पद्धति से संबंधित विद्वानों का कहना है कि तत्कालीन यूरोप के सामाजिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य में समाजशास्त्र के उदय तथा विकास पर विचार किया जाना चाहिए । 19वीं शताब्दी के आरंभिक दशकों में औद्योगीकरण एवं पूंजीवाद के विकास के परिणाम स्वरूप सामाजिक जीवन में जो बदलाव आया उस के संदर्भ में समाजशास्त्र के उद्भव एवं विकास का पता लगाया जाना चाहिए ।

## समाजशास्त्र के उद्भव की पृष्ठभूमि

18वीं शताब्दी के यूरोप की सामाजिक , आर्थिक , राजनीतिक एवं बौद्धिक परिस्थितियों ने समाजशास्त्र के उद्भव और विकास में विशेष योग दिया । अब राज्य व समाज की उत्पत्ति में देवी उत्पत्ति के सिद्धांत में विश्वास कम हुआ । अब इनकी उत्पत्ति में मानवीय प्रयत्नों को महत्वपूर्ण माना गया । इंग्लैंड में राजा के अधिकार कम हुए एवं संसद के अधिकारों में वृद्धि हुई । फ्रांस में राज्य क्रांति हुई , कारखानों पर आधारित नवीन अर्थव्यवस्था अस्तित्व में आई , नगरों का विकास हुआ तथा समुदायों के दमनात्मक शक्ति में कमी आई । इन सब के परिणाम स्वरूप अनेक सामाजिक , राजनीतिक एवं आर्थिक परिवर्तन होने लगे । इससे समाज में बदलाव आया , समाज की नई संरचना विकसित हुई । इस संरचना की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित थीं-

1. राजतंत्र के अस्थान पर लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था का विकास हुआ ।
2. भूमि तथा कृषि पर आधारित अर्थव्यवस्था की जगह औद्योगिक व्यवस्था का उदय हुआ ।
3. गांवों से लोग या तो अन्य देशों की ओर या अपने ही देश में नगर की ओर जाने लगे ।
4. परंपरागत सामुदायिक संबंधों एवं दबाव वाली सामाजिकता के स्थान पर व्यक्तिवादी विचारधारा का विकास हुआ ।

फ्रांस में राज्यक्रांति (1789) के परिणामस्वरूप स्वरुप सामाजिक बदलाव की प्रक्रिया में तेजी आई ।

इस क्रांति के फलस्वरूप स्वतंत्रता , समानता एवं बंधुत्व के विचार पनपे ।फ्रांस में राजतंत्र के स्थान पर लोकतांत्रिक राजप्रणाली प्रारंभ हुई । राज्य क्रांति के पश्चात फ्रांस में पनपी सामाजिकपन अव्यवस्था ने फ्रांस में सेंट साइमन तथा अगस्त कोंत को काफी प्रभावित किया । इन दोनों विद्वानों ने व्यवस्था पुनर्गठन एवं समाज की वैज्ञानिक व्याख्या हेतु एक नए समाज विज्ञान की आवश्यकता पर बल दिया ।

करीब-करीब इसी समय प्राकृतिक विज्ञानों का विकास हुआ और इसका प्रभाव सामाजिक विज्ञानों पर भी पड़ा । अब यह महसूस किया जाने लगा कि जिस प्रकार सार्वभौम सिद्धांतों की सहायता से भौतिक जगत की व्याख्या की गई है इसी प्रकार से सामाजिक विज्ञानों में भी सार्वभौम सिद्धांतों का प्रतिपादन कर सामाजिक जगत की व्याख्या की जा सकती है । जिस प्रकार की अध्ययन विधियों जैसे निरीक्षण , परीक्षण एवं प्रयोग का सहारा प्राकृतिक विज्ञान में लिया जाता है उसी प्रकार के अध्ययन विधियों का उपयोग उपयोग सामाजिक विज्ञानों में भी किया जा सकता है । यहां भी वस्तुनिष्ठ तरीके से या तटस्थ रहकर समाज का अध्ययन करना संभव है । इन मान्यताओं ने समाजशास्त्र के विकास में विशेष योगदान दिया ।

ब्रिटिश समाजशास्त्री बॉटमोर का कहना है कि 18वीं शताब्दी की बौद्धिक परिस्थितियां समाजशास्त्र के उदय में सहायक प्रमाणित हुई । इस समय राजनीतिक दर्शन , इतिहास के दर्शन , उद्विकास के प्राणी शास्त्रीय सिद्धांत , सामाजिक - राजनीतिक सुधार आंदोलन तथा सामाजिक सर्वेक्षण विधि के विकास ने समाज के वस्तुनिष्ठ अध्ययन के लिए पृष्ठभूमि तैयार की

इतिहास की दार्शनिक व्याख्या करने वालों में एडम फर्ग्यूसन का नाम उल्लेखनीय है इन्होंने राज्य , समाज , परिवार , नातेदारी , जनसंख्या , प्रथा एवं कानून पर विचार व्यक्त किए । इनकी मान्यता थी कि समाज पारस्परिक रूप से संबंध संस्थाओं की प्रणाली है । फर्ग्यूसन के चिंतन का प्रभाव हीगल तथा सेंट साइमन के विचारों पर पड़ा । हीगल का प्रभाव कार्ल मार्क्स पर तथा सेंट साइमन का अगस्त कौन पर पड़ा ।

इस नवीन सामाजिक विज्ञान में सेंट साइमन ने निम्नांकित बातों पर ध्यान दिया दिया-

1. वैज्ञानिक अन्वेषण , औद्योगिक क्रांति एवं राजनीतिक उथल-पुथल के परिणाम स्वरुप सामाजिक संरचना काफी कुछ बदल चुका है । अतः परिवर्तित सामाजिक संरचना के विश्लेषण के लिए एक नए समाज विज्ञान की आवश्यकता है ।

2. इस नवीन विज्ञान में प्राकृतिक विज्ञानों में प्रयुक्त होने वाली पद्धतियों को काम में लिया जाना चाहिए ।

3. आज की बदली हुई परिस्थितियों में आस्था , कल्पना एवं धार्मिक विवेचन का कोई महत्व नहीं रह गया है ।

4. अपने उपर्युक्त तर्कों को मूर्त रूप देने हेतु सेंट साइमन ने अगस्त कोंत के साथ मिलकर सामाजिक जीवन का अध्ययन करने हेतु एक नए विज्ञान – सामाजिक भौतिकी को विकसित करने का प्रयास किया जिसे बाद में समाजशास्त्र नाम दिया गया ।

इस विज्ञान के द्वारा सामाजिक जीवन का उसी प्रकार अध्ययन किया जाएगा जिस प्रकार भौतिक शास्त्र द्वारा भौतिक जगत का अध्यन किया जाता है।

# संदर्भ सूची –


1. समाजशास्त्रीय विचारधारा – एल.पी.यू. ,लक्ष्मी प्रकाशन , नई दिल्ली ।
2. सामाजिक विचारक – रवीन्द्रनाथ मुखर्जी , विवेक प्रकाशन , नई दिल्ली ।
3. सामाजिक विचारक: कोंत से मर्टन तक , दोषी &जैन, रावत प्रकाशन , जयपुर ।
4. अध्ययन सामग्री – IGNOU , नई दिल्ली ।